भारत का अपवाह तंत्र

Drainage System of India

निश्चित वाहिकाओं के माध्यम से जल के प्रवाह को अपवाह जाता है तथा वाहिकाओं के जाल के अपवाह तंत्र के रूप में जानते हैं।

Flow of water through a definite channels is called drainage and the grid of channels is called drainage system.

भारत का अपवाह तंत्र

- उत्पत्ति के आधार पर
  - हिमालयी अपवाह तंत्र ✓
  - प्रायद्वीपीय अपवाह तंत्र ✓
- जल विसर्जन के आधार पर
  - बंगाल की खाडी में गिरने वाली नदियाँ
  - अरब सागर में गिरने वाली नदियाँ
  - अंतःप्रवाह की नदियाँ
    - → घग्घर
    - → लूणी

✓ **कथन (A)** : बंगाल की खाड़ी की लवणता अरब सागर की तुलना में कम है।

✓ **कारण (R)** : वर्षभर बंगाल खाड़ी में बड़ी नदियां स्वच्छ जल का विसर्जन अधिक करती हैं।

Ans. A व R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या भी करता है।

हिमालयी अपवाह तंत्र

1. गंगा नदी अपवाह तंत्र
2. सिंधु नदी अप. तंत्र
3. ब्रह्मपुत्र नदी अप. तंत्र
4. घग्घर नदी

गंगा, सिंधु, ब्रह्मपुत्र, सतलज पूर्ववर्ती नदी तंत्र का उदाहरण है जिन्होंने हिमालय का लंबवत् अपरदन कर प्राकृतिक दर्रों का निर्माण किया है।

सतलज नदी तो मुख्य हिमा. की तीनों श्रेणियों (महान, मध्य व शिवालिक) को काटती है।

गंगा नदी का अपवाह तंत्र

- भारत का सबसे बड़ा अपवाह तंत्र है।
- गंगा भारत की सबसे पवित्र नदी है।
- 2008 में इसे राष्ट्रीय नदी तथा 2009 में गंगाई डॉल्फिन को राष्ट्रीय जलीय जीव घोषित किया गया।
- गंगाई डॉल्फिन अभयारण्य भागलपुर (बिहार) व अनुसंधान केन्द्र पटना में है।

कुल लंबाई = 2525 KM

- UK में
  - 110 KM
    - न्यूनतम
- UP में
  - 1450 KM
    - सर्वाधिक
- बिहार में
  - 445 KM
- पश्चिम बंगाल में
  - 520 KM

भारत में गंगा की अपवाह द्रोणी = 8.6 लाख km^2

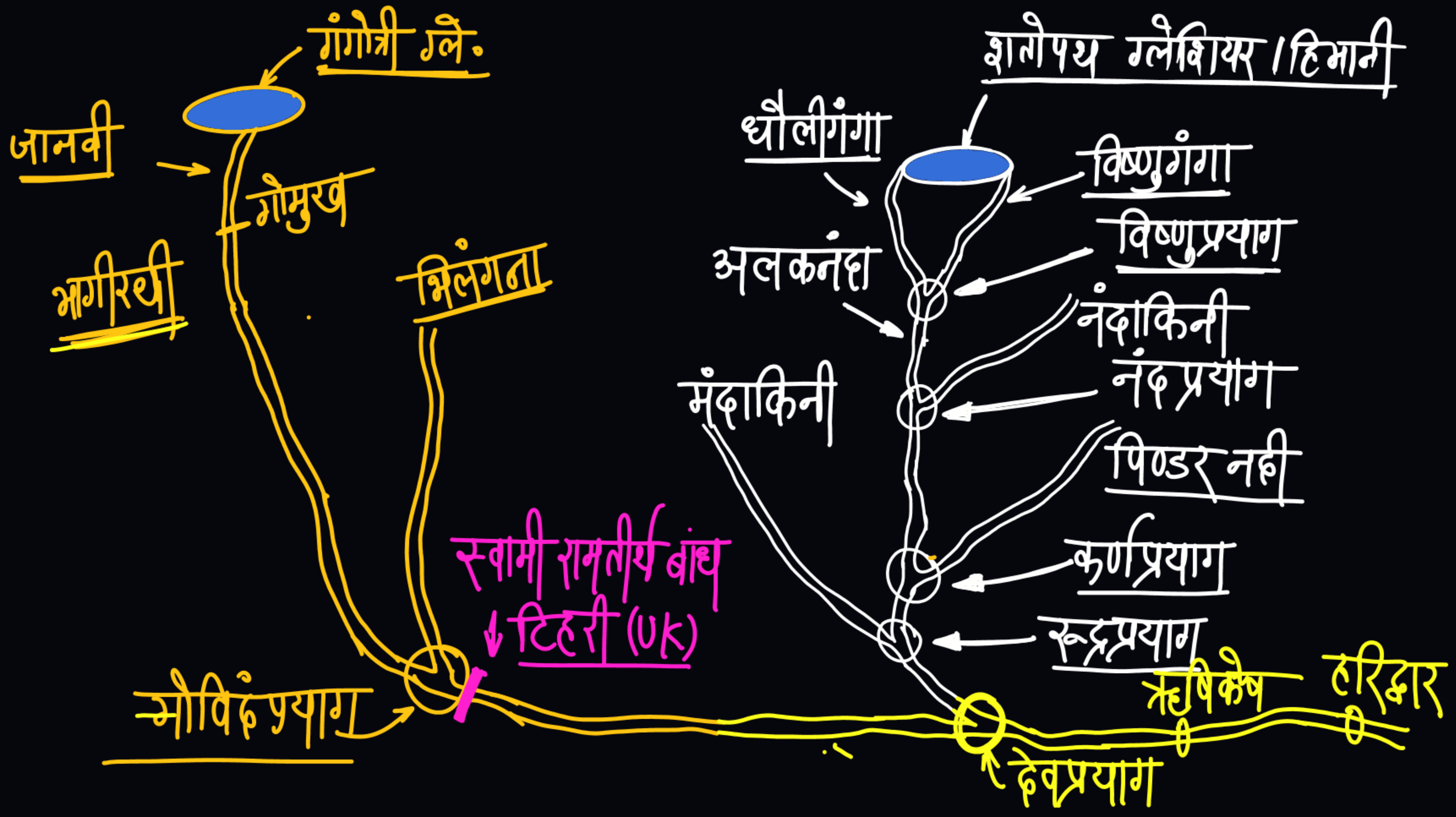

गंगोत्री ग्ले.
जान्वी
गोमुख
भागीरथी
भिलंगना
स्वामी रामतीर्थ बांध
टिहरी (UK)
गोविंदप्रयाग
शतोपथ ग्लेशियर / हिमानी
धौलीगंगा
विष्णुगंगा
विष्णुप्रयाग
अलकनंदा
नंदाकिनी
नंद प्रयाग
मंदाकिनी
पिण्डर नदी
कर्णप्रयाग
रूद्रप्रयाग
ऋषिकेश
हरिद्वार
देवप्रयाग

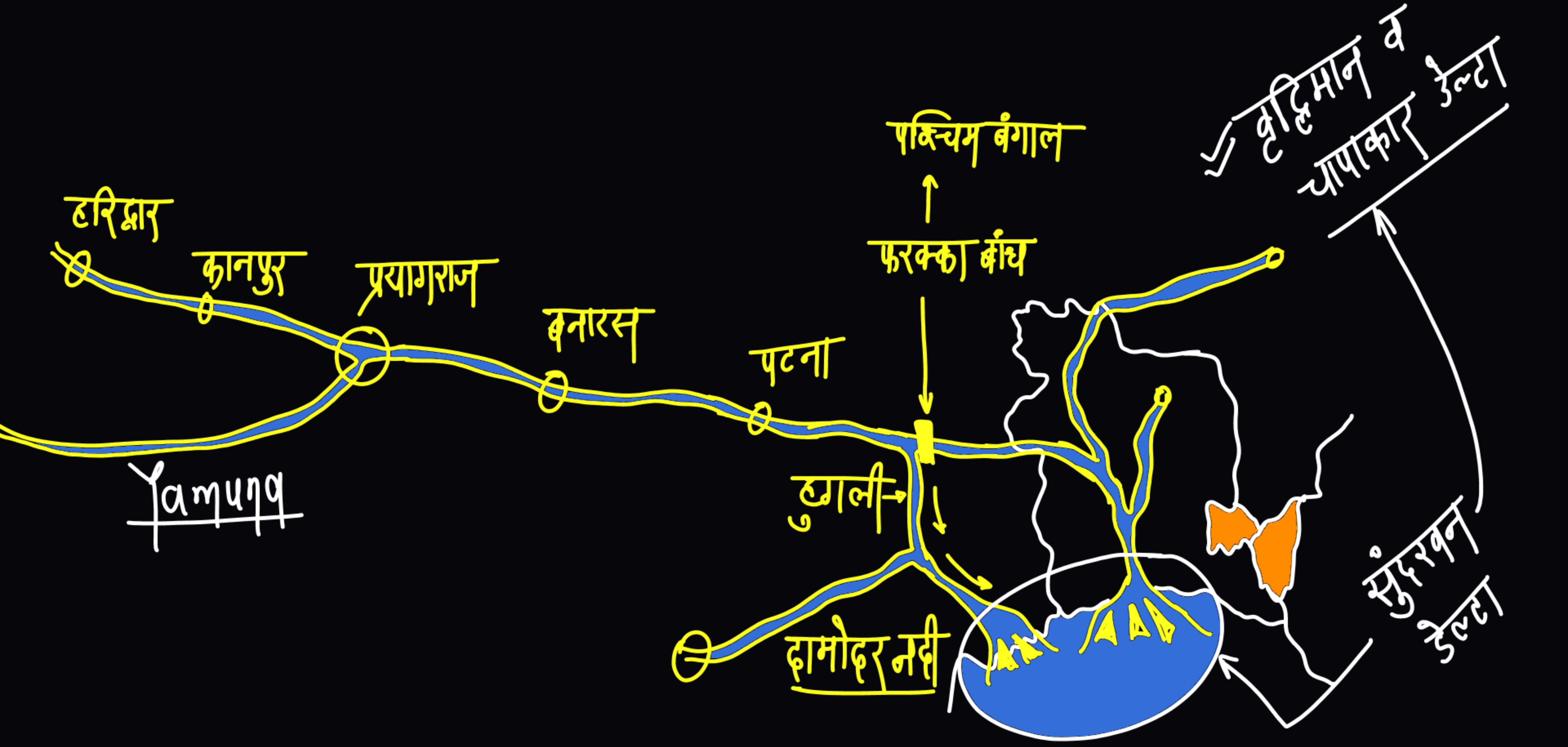

हरिद्वार
कानपुर
प्रयागराज
बनारस
पटना
Yamuna
फरक्का बांध
पश्चिम बंगाल
हुगली
दामोदर नदी
वृद्धिमान व चापाकार डेल्टा
सुंदरवन डेल्टा